DPL - 04

December - Examination 2015

DPL Examination

पाण्डुलिपि विज्ञान एवं प्राकृत पाण्डुलिपियाँ

Paper - DPL - 04

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 100**

निर्देश : यह प्रश्न–पत्र तीन खण्डों 'अ', खण्ड 'ब' और 'स' में विभाजित है। खण्ड 'अ' के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

खण्ड – अ $10 \times 2 = 20$

नोट : निम्नलिखित सभी प्रश्नों को करना अनिवार्य है तथा सभी उत्तर की अधिकतम शब्द सीमा 30 शब्द होगी। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1) **निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(i) सर्वप्रथम लिपि का विकास किस रूप में हुआ।

(ii) पाण्डुलिपि में कालसंकेत के अंक किसमें लिखे हुये प्राप्त होते हैं।

(iii) शब्द क्या है उसके भेद बताईये –

(iv) प्रशस्ति में किसके कार्य की प्रशंसा की जाती है।

(v) शासकीय पट्टो परवानों की लिपि का अध्ययन किसमे होता था?

(vi) यहूदी परम्परा में लेखन निर्माता किसको माना जाता था?

(vii) मूलपाठ की खोज करने वाले को क्या कहते है?

(viii) संवत् 1784 में किस नगर की स्थापना हुई थी?

(ix) हस्तलेखों की पृष्ठभूमि का ज्ञान किससे मिलवा है?

(x) पाण्डुलिपि प्राप्त के दो क्षेत्रों के नाम बताइये?

खण्ड – ब $4 \times 10 = 40$

नोट : कोई चार प्रश्न कीजिए। प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा।

2) काल – संकेत रहित ग्रंथ के काल – निर्णय पद्धति को बताईये।

3) क्षत्रीय अनुसंधान कर्त्ता के गुण बताईये।

4) लिपिविज्ञान पर टिप्पणी कीजिये।

5) लिपिकर्ता के महत्त्व को समझाईये।

6) शिलालेख की छाप लेने की विधि का संक्षेप में निरूपण कीजिये।

7) सिन्धु लिपि के बारे में लिखिये।

8) पाण्डुलिपि के लिप्यासन को समझाइये।

9) शब्द के भेद का वर्णन कीजिये।

खण्ड – स

$2 \times 20 = 40$

नोट : निम्नलिखित चार (4) प्रश्नों में से कोई दो (2) प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है – प्रत्येक प्रश्न बीस अंक का है। अधिकतम सीमा 500 शब्द है।

10) राजस्थान में पाण्डुलिपी प्राप्ति स्त्रोत का वर्णन कीजिये।

11) ग्रंथ का आन्तरिक परिचय संक्षेप में दीजिये।

12) पाण्डुलिपि विज्ञान को परिभाषित करते हुये इसके नामकरण की विशद विवेचना कीजिये।

13) निम्न में से किसी दो पाण्डुलिपियों का आधुनिक रूपान्तरण कीजिये।